

PROF. G. VENKATASUBBIAH

Prof. G. Venkatasubbiah is a Kannada lexicographer par excellence embodying liter knowledge, scholarship and creative talent. His contribution to modern Kannada lexicography — a field requiring rare scholarship, knowledge of other Dravidian languages, Sanskrit and English, deep study of all ancient Kannada literature, poetic appreciation and exhaustive study in modern linguistic approach - is extraordinary and he is referred to as the Father of modern Kannada lexicography.

2. Born on August 23, 1913, 103 year old Prof. G Venkatasubbiah obtained his masters degree in Kannada with a gold medal in 1937 and BT degree in1939 from The University of Mysore. Then, he engaged himself in teaching and literary research. By self-study, he became erudite and enlightened thousands of students as a very popular professor of Kannada. He was also thePresident of Kannada Sahitya Parishat and member of many committees connected with literature, lexicography and education.

3. As a linguist, he is one of the very few lexicographers of the country who can speak with authority on Kannada words and their meaning including their origin and development. His explanation of connotative and denotative meanings of words and how they can become jewels of expression in the hands of creative writers has helped many young writers to excel. His weekly column on this aspect, IGO KANNADA (This is Kannada), in Karnataka's popular daily Prajavani ran for more than 18 years. This column worked like an open classroom and a Socio-linguistic dictionary was evolved. IGO KANNADA, a Socio-linguistic dictionary has since been published. This epic work is the culmination of his deep involvement as chief editor — for nearly 20 years, in the preparation of an authoritative, Encyclopaedic, Chronological, Monolingual Kannada dictionary on historical principles in line with the Oxford University English Dictionary, under the aegis of Kannada Sahitya Parishad. He brought this 8 volumes and 9000 pages dictionary to near completion during his tenure.

4. Prof. G. Venkatasubbiah has authored the first book in Kannada on modern lexicology. He has compiled ten dictionaries which include a dictionary of Foreign Loan Words in Kannada, a concordance on medieval poet Muddana and a dictionary of "Difficult words in Kannada". His English Kannada Dictionary is also made available in Braille. By these contributions he has carved a niche in Kannada literature. Apart from his lexicographical works he has authored more than thirty independent works, edited many Kannada texts and translated a few English books and written books for children. Total publication to his credit till date is nearly 80 in number.

5. Prof. G. Venkatasubbiah has received a number of awards and accolades in recognition of his services to the Kannada language and literature. They include Rajyotsava Award (1991) and Karnataka Ekikarna Suvarna Puraskar (2007) from Government of Karnataka, Karnataka Sahitya Academy Award in 1997 and Special Award during 2000 from Karnataka Press Academy. He has received PAMPA PRASHASTI highest literary award presented by Government of Karnataka during 2014. He is the recipient of Kulapati K M Munshi award from Bharatiya Vidya Bhawan in 2012. He has also received many Awards presented in the name outstanding Scholars of Karnataka viz, Shamba Prashasti; Sediyapu Prashasti; Shivarama Karantha Prashasti; Muddana Puraskara; Masti Prashasti; Goruru Prashasti; A Na Kru- Nirman Prashasti; V. K. Gokak Prashasti etc.

6. The President of India presented a medallion to Prof. G Venkatasubbiah, being the senior most alumni and an achiever - on the occasion of the inauguration of the centenary celebrations of The University of Mysore in 2015. In 2016, Kannada Sahitya Parishad presented its Centenary Endowment Award to him. In 2005, he has been conferred `Nadoja', honorary Doctorate from Kannada Vishvavidyalaya, Hampi. He has been conferred honorary Doctorate degree from Rani Chennamma University, Belagam in 2013. His unanimous selection to preside over of the prestigious 77th All India Kannada Sahitya Sammelana (2011) was welcomed by one and all. His well-wishers and students have established endowments in The University of Mysore, Bangalore University and Kannada Vishvavidyalaya, Hampi to award Gold Medal in his name.

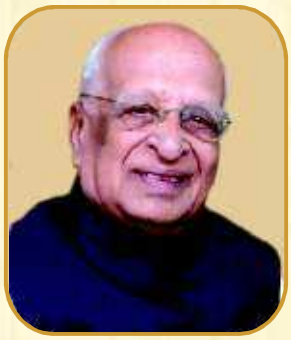

प्रो. जी. वेंकटसुब्बय्या

प्रो. जी. वेंकटसुब्बय्या एक कन्नड़ कोश लेखक हैं, आप सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक ज्ञान, विद्वत्ता और रचनात्मक प्रतिभा के साकार रूप हैं। आधुनिक कन्नड़ कोश-रचना – एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें दुर्लभ विद्वत्ता, अन्य द्रविड़ी भाषाओं के ज्ञान, संस्कृत और अंग्रेजी के ज्ञान, सभी प्राचीन कन्नड़ साहित्य के गहन अध्ययन, काव्यात्मक समालोचना और आधुनिक भाषाई पहलुओं की आवश्यकता पड़ती है, इसमें आपका असाधारण योगदान है और आपको आधुनिक कन्नड़ कोश-रचना के जनक के नाम से संबोधित किया जाता है।

2. आपका जन्म 23 अगस्त, 1913 को हुआ और इस समय आप 103 वर्ष के हैं। आपने 1937 में स्वर्ण पदक के साथ कन्नड़ भाषा में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की और 1939 में मैसूर विश्वविद्यालय से बी. टी. की उपाधि प्राप्त की। इसके पश्चात् आप अध्यापन और साहित्यिक अनुसंधान में जुट गए। स्वयं अध्ययन के माध्यम से आप ज्ञाता बन गए और कन्नड़ भाषा के एक प्रसिद्ध प्रोफेसर के तौर पर हजारों विद्यार्थियों को आपने आलोकित किया। आप कन्नड़ साहित्य परिषद के अध्यक्ष और साहित्य, कोश-रचना और शिक्षा से जुड़ी बहुत सी समितियों के सदस्य भी रह चुके हैं।

3. भाषाविद् के तौर पर आप देश के उन कुछेक कोश-रचनाकारों में से एक हैं जो कन्नड़ भाषा के शब्दों और उनके अर्थ पर शब्दों के उद्गम और विकास सहित अधिकार के साथ बोल सकते हैं। शब्दों के गुणार्थक और सूचक अर्थों की आपकी व्याख्या और वे किस प्रकार रचनात्मक लेखकों के हाथ में पहुंचकर अभिव्यक्ति के मोती बन सकते हैं, इस विधा ने बहुत से युवा लेखकों को श्रेष्ठ बनने में सहायता प्रदान की है। इस पहलू पर कर्नाटक के प्रसिद्ध दैनिक प्रजावाणी में आपका साप्ताहिक स्तम्भ, इगो कन्नड़ (यह कन्नड़ है) 18 वर्ष से अधिक तक चलता रहा। इस स्तम्भ ने खुले क्लासरूम की तरह कार्य किया और एक सामाजिक भाषाई शब्दकोश तैयार हो गया। इगो कन्नड़, एक सामाजिक भाषाई शब्दकोश अब प्रकाशित हो चुका है। यह महान कार्य, कन्नड़ साहित्य परिषद के तत्वावधान में आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी इंग्लिश डिक्शनरी की तर्ज पर एतिहासिक सिद्धातों के आधार पर एक प्रामाणिक, विश्वकोशीय, कालक्रमिक, एकभाषी कन्नड़ शब्द कोश तैयार करने में लगभग 20 वर्षों तक मुख्य संपादक के तौर पर आपकी गहन भागीदारी की पराकाष्ठा का परिणाम है। आपकी कार्य अवधि के दौरान आपने 8 खण्डों वाले 900 पृष्ठों के इस शब्द कोश को लगभग पूरा कर दिया है।

4. आपने आधुनिक शब्द कोश विज्ञान के ऊपर कन्नड़ में पहली पुस्तक लिखी है। आपने दस शब्द कोश संकलित किए हैं जिनमें कन्नड़ भाषा में उधार लिए गए विदेशी शब्द, मध्यकालीन कवि मुद्दाना से संबंधित शब्दक्रमणिका और "कन्नड़ में कठिन शब्द" शब्द कोश शामिल हैं; आपका अंग्रेजी कन्नड़ शब्दकोश ब्रैल में भी उपलब्ध कराया गया है। इन योगदानों से आपने कन्नड़ साहित्य को आला स्थान प्रदान किया है। शब्दकोशीय कार्यों के अतिरिक्त, आपने तीस से अधिक स्वतंत्र रचनाएं लिखी हैं, बहुत सी कन्नड़ पाठ्य पुस्तकों का संपादन और कुछ अंग्रेज़ी पुस्तकों का अनुवाद किया है तथा बच्चों के लिए पुस्तकें लिखी हैं। आज की तारीख तक आपको लगभग 80 प्रकाशनों का श्रेय प्राप्त है।

5. कन्नड़ भाषा और साहित्य में आपकी सेवाओं के सम्मान में आपको बहुत से अवार्ड और पुरस्कार मिल चुके हैं। इसमें कर्नाटक राज्य सरकार से राज्योत्सव अवार्ड (1991) और कर्नाटक एकीकरण सुवर्ण पुरस्कार (2007), 1997 में कर्नाटक साहित्य अकादमी अवार्ड और कर्नाटक प्रेस अकादमी से 2000 के दौरान विशेष अवार्ड सम्मिलित हैं। 2014 में आपने कर्नाटक राज्य सरकार द्वारा दिया गया उच्चतम साहित्य अवार्ड 'पम्पा' प्रशस्ति प्राप्त किया है। 2012 में भारतीय विद्या भवन से आपको कुलपति के. एम. मुंशी अवार्ड प्राप्त हुआ। आपको कनार्टक के उत्कृष्ट विद्वानों अर्थात् शाम्बा प्रशस्ति; सेदियापु प्रशस्ति; शिवराम करन्था प्रशस्ति; मुद्दाना पुरस्कार, मस्ती प्रशस्ति; गोरूरू प्रशस्ति; ए. ना करू-निर्माण प्रशस्ति और वी. के गोगक प्रशस्ति आदि जैसे बहुत से अवार्ड भी प्राप्त हो चुके हैं।

6. भारत के राष्ट्रपति ने वर्ष 2015 में मैसूर विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष समारोह के उद्घाटन अवसर पर वरिष्ठतम भूतपूर्व छात्र तथा सफल व्यक्ति होने के नाते आपको बड़ा पदक देकर सम्मानित किया। वर्ष 2016 में कन्नड़ साहित्य परिषद ने आपको सेन्टेनरी इन्डाउमेंट अवार्ड से नवाजा है। वर्ष 2005 में आपको कन्नड़ विश्वविद्यालय, हम्पी द्वारा 'नादोजा', मानद वाचस्पति की उपाधि प्रदान की गई। वर्ष 2013 में आपको रानी चेन्नमा विश्वविद्यालय, बेलगाम द्वारा मानद वाचस्पति की उपाधि प्रदान की गई। प्रतिष्ठित 77वें अखिल भारतीय कन्नड़ साहित्य सम्मेलन (2011) की अध्यक्षता हेतु आपके एकमत से चयन का सभी के द्वारा स्वागत किया गया। आपके शुभचिन्तक और विद्यार्थियों ने आपके नाम से स्वर्ण पदक देने के लिए मैसूर विश्वविद्यालय, बंगलौर विश्वविद्यालय और कन्नड़ विश्वविद्यालय, हम्पी में इन्डाउमेन्टस की व्यवस्था बनाई है।